ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 22 कुल पृष्ठ-8 **18 से 24 फरवरी, 2021** दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 मा. शु.-07

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी की पड़पौत्री सौ. नोराः के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में

कल्पतरु साधना आश्रम, गंगनहर मुरादनगर (गाजियाबाद) में अथर्ववेद पारायण यज्ञ भव्यता के साथ सम्पन्न

अनेक गणमान्य महानुभावों ने यज्ञ में आहुति देकर यजमान परिवार को शुभकामनाएँ दीं

बेटी के जन्मोत्सव को भव्य समारोह पूर्वक मनाकर परिवार ने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया

– स्वामी आर्यवेश

विश्व की समस्त आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी कोषाध्यक्ष, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. माया प्रकाश त्यागी जी के सुयोग्य सुपुत्र श्री प्रवीण त्यागी जी ने अपनी पौत्री सौ. नोराः के जन्मोत्सव को भव्य एवं शानदार समारोह के रूप में आयोजित करके समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। विदित हो कि गत् 5, 6 फरवरी, 2021 को पं. माया प्रकाश त्यागी जी के संरक्षण में संचालित कल्पतरु साधना आश्रम, गंगनहर मुरादनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में उनकी पड़पौत्री नोराः के जन्मोत्सव के अवसर पर अथर्ववेद पारायण यज्ञ एवं समारोह का भव्य आयोजन किया गया था। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, राज्यसभा सांसद श्री के.सी. त्यागी जी, जदयू नेता श्री सुरेन्द्र त्यागी, प्रसिद्ध सन्त एवं राजनेता आचार्य प्रमोद कृष्णम् जी, उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री अतुल गर्ग, पूर्व एम.एल.सी. श्री प्रशान्त चौधरी, स्थानीय विधायक श्री अजीत पाल त्यागी, दैनिक अथाह के सम्पादक श्री अशोक ओझा, श्री शेखर त्यागी, श्री सुधीर त्यागी डिडौली, श्री संजय त्यागी, श्री कुणाल त्यागी, श्री दीपक गुप्ता, श्री टीटू त्यागी, डॉ. बबली गुर्जर, श्री प्रदीप त्यागी, बिल्डर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के उत्तर प्रदेश राज्य के अध्यक्ष श्री रविन्द्र त्यागी, श्री ओम प्रकाश आर्य, जिलासभा के प्रधान मा. ज्ञानेन्द्र आर्य, श्री सेवाराम त्यागी जिला सभा के मंत्री, पूर्व प्रधान श्री श्रद्धानन्द शर्मा, पूर्व मंत्री श्री तेजपाल आर्य, श्री नरेश चन्द्र आर्य प्रधान, श्री रविन्द्र आर्य मंत्री, श्री सुरेन्द्र पाल आर्य जिला सभा के उपाध्यक्ष, श्री राज कुमार आर्य आर्डिनेन्स फैक्ट्री, श्री कृष्णपाल आर्य जलालाबाद, श्री सुभाष आर्य, श्री अक्षय कुमार सिंह, श्री कृष्णबन्धु सचदेवा आदि ने सम्मिलित होकर यजमान परिवार को अपनी शुभकामनाएँ दीं तथा बच्ची को आशीर्वाद दिया।

सौ. नोराः

इस अवसर पर अथर्ववेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा एवं आचार्य के रूप में कर्मकाण्ड के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य गुरुवचन शास्त्री एवं गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के यशस्वी विद्वान् डॉ. योगेश जी शास्त्री ने यज्ञ को सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न कराया और अपने उपदेशामृत से उपस्थित श्रोताओं को अत्यन्त लाभान्वित किया।

कल्पतरु साधना आश्रम आर्यनेता पं. माया प्रकाश त्यागी जी की

शेष पृष्ठ 5 पर

27 फरवरी बलिदान दिवस पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष – चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था?काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है?युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम?'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता?मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेतों की सज़ा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।

आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम्' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के

आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी की सज़ा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था ..... धांय–धांय कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

ओ३म् का जाप और स्वास्थ्य विज्ञान

–आचार्य पं. विभुमित्र शास्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' के प्रारम्भ में लिखा है कि ''ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्य गर्भ, वायु और तेजसादि, मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।'' वेदों और शास्त्रों में भी ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है। वेद में ''ओ३म् एवं ब्रह्म'' वाक्य आया है, अर्थात् परमात्मा का नाम ओ३म् है। वह आकाश की तरह व्यापक है। ओ३म् सार्थक शब्द है, जो रक्षा करता है, उसे ओ३म् कहते हैं– अवतीत्योम्। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि ''ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं– ''ओमित्येतदश्रमुद्तीथ मुपासीत।''

योगदर्शन में इसी ओ३म् नाम को ''प्रणव'' (ओंकार) कहा गया है– ''तस्य वाचकः प्रणवः''। श्रीमद् भगवद् गीता में ओ३म् नाम की महिमा वर्णित है:–

ओंतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा।।
तस्मादोमित्यु दाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ता सततं ब्रह्मवादिनाम्।।

नाम और नामी का सम्बंध अनादि और घनिष्ठ है। इसी कारण शास्त्रों में नाम जप की बड़ी महिमा है। योग शास्त्र में ''तज्जपः तदर्थ भावनम्'' कहा गया है, जिसका अर्थ है प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप और उसके सार्थक स्वरूप का चिन्तन करना। ईश्वर स्वरूप को बार–बार आवृत्ति करना ही जप है। जप ईश्वर प्रणिधान का साधन है– क्योंकि चंचल मन की एकाग्रता करने में सहायक है और इससे मानसिक शुद्धि होती है। इसीलिए मनुस्मृति में जप यज्ञ को विधि यज्ञ से दस गुणा श्रेष्ठ कहा गया है– ''विधि यज्ञाज्जप यज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः।'' महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधना में जप को प्रथम स्थान दिया है– ''अनेन जपोपासनादि कर्मणा धमार्थ काम मोक्षाणा सधः सिद्धिर्भवेन्नः''। पूर्व के आर्यजन भजन गाते हुए कहते थे कि–

''ओ३म् के जप से हमारा ध्यान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह जाप हमको मुक्ति तक पहुँचायेगा।।''

इस ओ३म् जाप को अब आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से ही नहीं अपितु शारीरिक स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से भी देखा जा रहा है। मेडिकल साइंस अब उन बीमारियों का इलाज ढूँढ रहा है– जिससे आधुनिक दवाएँ हार चुकी हैं। विज्ञान पत्रिका 'साइंस'' में अभी हाल ही में एक शोध प्रकाशित हुआ है, जिसमें कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है, जिसका अलग–अलग आवृत्तियों से रक्तचाप, दिल दिमाग, पेट और खून से जुड़ी हुई कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारिक असर दिखा सकता है। यहाँ तक कि सेरीब्रल पैल्सी–जैसी असाध्य बीमारी में भी ओ३म् के उच्चारण से उपचार की संभावना बढ़ सकती है। दिल और दिमाग के रोगियों पर किये गये परीक्षण के विषय में उक्त पत्रिका में उल्लेख है कि रिसर्च एण्ड एक्सपेरिमेन्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो सांइसेज के एक दल ने उक्त रोगों के विषय में शोध किया है और बहुत कुछ नई जानकारी प्राप्त की है। दल के प्रमुख प्रोफेसर जे. मॉर्गन के अनुसार उनके दल ने सात साल तक दिल और दिमाग के रोगियों पर परीक्षण किया और परीक्षण में देखा गया कि ओ३म् का अलग–अलग आवृत्तियों में और ध्वनियों में नियमित रूप से किया गया जाप काफी असरकारी है। ओम् का उच्चारण पेट, सीने और मस्तिष्क में एक कंपन पैदा करता है, जो शरीर की मृत कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है। ओ३म् का जप मस्तिष्क से लेकर नाक, गला, फेफड़े तक के हिस्से से बड़ी तेज तरंगों का वैज्ञानिक रूप से संचार करता है।'' परीक्षण के लिए मस्तिष्क और हृदय के विभिन्न रोगों से ग्रस्त २५०० पुरुषों और २००० महिलाओं को चुना गया, जिसमें से कुछ लोग बीमारी के अन्तिम चरण में पहुँच चुके थे। प्रो० मॉर्गन की टीम ने धीरे–धीरे उन लोगों को मिलने वाली बाकी दवाइयों को बंद कर वही दवाएँ जारी रखी जो जीवन बचाने के लिए जरूरी थीं। परिणाम चौंकाने वाला था। डाक्टरी निरीक्षण में उक्त रोगियों ने प्रतिदिन सुबह छह से सात बजे तक एक घंटे तक विभिन्न आवृत्तियों में ओ३म् का जाप किया। इसके लिए योग्य प्रशिक्षक भी रखे गये। हर तीन माह पर इन लोगों का शारीरिक परीक्षण करवाया गया। चार साल बाद सामने आये परिणाम आश्चर्य जनक थे। ७० फीसदी पुरुष और ८५ फीसदी महिलाओं को नब्बे फीसदी राहत मिली। प्रतिदिन ओ३म् के उच्चारण से अधि संख्यक रोगियों के स्वास्थ्य में काफी सुधार एवं दवाओं का असर भी बढ़ा।

ओम् का पहला जिक्र वेदों में मिलता है और ब्रह्माण्ड का कारण माना जाता है– ''ओं खं ब्रह्म''। भगवद् गीता में इसी प्रणव (ओ३म्) को मनुष्यों के शरीराकाश में भी व्याप्त माना गया है– ''प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु''। शरीराकाश से ही विभिन्न ध्वनियों का तथा प्रामाण, अपान, व्यान, उदान, समान– जैसे पंच प्राणों का संचरण होता है– जो स्वास्थ्य और आयु का कारण बनता है। इन पंक्तियों का लेखक स्वयं हृदय रोगग्रस्त है और पटना स्थित इन्दिरा कार्डियोलोजी हॉस्पिटल में सप्ताहों भर्ती रहा। वहाँ के निदेशक डॉ० एस.एन. मिश्रा ने तत्रत्य डाक्टरों से कई प्रकार की जांच करायी, कई बार ई०सी०जी० हुई और ''इको'' के द्वारा हृदय की रक्त धमनियों की सही स्थिति की जानकारी ली गई। वह स्क्रीन पर भी दिखायी गई– जिसे मैंने स्वयं और डाक्टरों की टीम के साथ वहीं कार्य करने वाली मेरी बड़ी पुत्री प्रतिभा कुमारी ने भी साश्रुनयनों से देखा और सब कुछ देखकर डाक्टरों के विचार से निदेशक ने सिरयस्ली समझ कर कारोनरी वायपास सर्जरी के लिए दिल्ली के अपोलो अस्पताल में रेफर कर दिया और कहा कि यहां जो भी इलाज संभव था किया गया। आप दिल्ली जाये। मैं अपनी शारीरिक और आर्थिक स्थिति से लाचार होकर चिकित्सार्थ दिल्ली न जा सका और अपने स्वाध्याय तथा स्वामी रामदेव जी से प्रेरणा पाकर ओ३म् जाप और प्राणायाम करने की ओर अग्रसर हुआ। आज छह साल से अपने सरस्वती भवन स्थित यज्ञशाला में बैठकर तथा कभी काल एकान्त नदी तट पर बैठ कर ओ३म् जप के साथ प्राणायाम करता आ रहा हूँ और अब बहुत कुछ स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर चुका हूँ। इस बीच मेरा ध्यान मनुस्मृति के उस श्लोक की ओर भी गया जिसमें जाप के साथ तीन महाव्याहृतियों का उल्लेख है– ''एतदक्षरमेतांच जपन् व्याहृति पूर्विकाम्।'' मैंने व्याहृतियों के साथ ओ३म् का जप और प्राणायाम करना शुरू किया और लाभ संतोषप्रद रहा। वस्तुतः तीन अक्षरों वाले ओम् (अ+उ+म्) के साथ तीन महा व्याहृतियों (भूः, भुवः, स्वः) का जप भी यदि प्राणायाम के साथ होता है, तो निश्चित ही प्राणापानादि शारीरिक वायु के संचरण से स्वास्थ्य में सुधार होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी संध्या की पुस्तक में इसीलिए प्राणायाम के मन्त्रों में महाव्याहृतियों का उल्लेख किया है, जो वैज्ञानिक सूझ है।

इस ओ३म् शब्द को लोग ओम्, ओ३म् (प्लुत) और तान्त्रिक या यौगिक रूप में लघुरूप देकर ॐ के रूप में भी लिखते हैं। यौगिक प्रक्रिया में जाकर वस्तुतः ओ३म् शब्द एकाक्षरी हो जाता है। शायद इसीलिए गीता में इसे एकाक्षरी कहा गया है– ''ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्'' इत्यादि। इस ॐ की व्याहति प्राणायाम के समय श्वासों के वहिःसरण और अन्तः सरण के समय आसानी से किया जा सकता है। त्रयक्षरी ओ३म् और तीन व्याहृतियों के जाप से नाभि से लेकर मस्तिष्क की धमनियाँ जहाँ सामान्य होने लगती हैं– रक्त प्रवाह सामान्य होने लगता है, वहीं हृदयस्थ धमनियों की रुकावट भी धीरे–धीरे ठीक होने लगती है। इंटरनल ऑटोनोमिक नर्व्स पर असर पड़ने लगता है और दोनों की गतिविधियाँ कम हो जाती हैं। एंग्जाइटी, डिप्रेशन और रक्तचाप कम हो जाता है, व्यक्ति शान्ति महसूस करने लगता है। बीमारियों का निवारण आसान हो जाता है। हाँ, ओ३म् जाप और प्राणायाम क्रिया के साथ ही साथ युक्ताहार विहार का होना आवश्यक है और इस प्रकार का योग (ओ३म् का जप प्राणायाम तथा युक्ताहार विहार का संयोग) जीवन में शारीरिक दुःखों का निवारक हो जाता है–

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्ठस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःख हा।।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल जिमाना, बड़ौत, जिला–बागपत (उ. प्र.) में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जयन्ती समारोह पूर्वक सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्‌बोधन

12 फरवरी, 2021 को गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल, जिमाना, बड़ौत, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 197वीं जयन्ती बड़ी धूमधाम के साथ मनाई गई। इस अवसर जहाँ विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया वहीं विशेष विचार गोष्ठी भी आयोजित की गई थी। कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त छपरौली के पूर्व विधायक डॉ. अजय कुमार तोमर, श्री वीरपाल राठी, युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री परमेन्द्र तोमर, प्रमुख व्यक्तित्व श्री सत्येन्द्र मलिक सिलाना, श्री लेखराज प्रधान, श्री धीरज उज्वल, श्री विनोद खेड़ा, श्री साधुराम जी पूर्व प्राचार्य दादू महाविद्यालय, डॉ. रामभजन व डॉ. कविता आदि महानुभावों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। आचार्य धन कुमार शास्त्री ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित करते हुए यज्ञ को समुचित ढंग से सम्पन्न कराया। इस आयोजन के सूत्रधार और स्कूल के संचालक प्रो. बलजीत सिंह आर्य के संरक्षण में स्कूल के निर्देशक श्री अनिल कुमार तथा सभी अध्यापकों ने कार्यक्रम की व्यवस्था को अच्छी प्रकार से संभाला हुआ था। मंच का संचालन श्री सुनील कुमार जी ने किया। संयोग की बात यह रही कि राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ. अजीत सिंह जी का भी जन्मदिन 12 फरवरी को है, अतः उनके जन्मदिन को भी सभी ने उत्साह के साथ मनाया और सभी ने जहाँ उनके कार्यों तथा उपलब्धियों पर प्रकाश डाला वहीं उनके दीर्घायुष्य जीवन की कामना की। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय लोकदल जनपद बागपत के अध्यक्ष चौ. सुखवीर सिंह गठीना ने की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी पूरे विश्व के महान समाज सुधारक, क्रान्तदर्शी विचारक, नारी शिक्षा एवं उनके सम्मान के प्रबल प्रवक्ता, स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रणेता, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रवर्तक, सतीप्रथा, बाल विवाह एवं विभिन्न सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध समाज को जागृत करने वाले, छुआछूत, भेदभाव एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाले युग प्रवर्तक थे। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार का दायित्व आर्यजनों को सौंपा था। अपने जन्मकाल से ही समस्त अवैदिक मान्यताओं को चुनौती देकर जीवन की सभी ऐषणाओं एवं सुख–सुविधाओं को त्यागकर पूरा जीवन वेद एवं वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित करके स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के समक्ष अनेक प्रलोभन आये किन्तु वे अपने पथ से कभी भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने उदयपुर के महाराणा जसवन्त सिंह के एक लिंग मंदिर के महन्त बन जाने के प्रस्ताव को ठुकरा कर त्याग का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। पौराणिक नगरी काशी बनारस में मूर्तिपूजा एवं अवैदिक मान्यताओं को चुनौती देकर शास्त्रार्थ के द्वारा समस्त पौराणिक विद्वानों को परास्त करना एवं अकेले उनके मुकाबले पर डटे रहना उनके अदम्य साहस का परिचायक है। महर्षि दयानन्द जी आज पहले से अधिक प्रासांगिक हैं, क्योंकि आज धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में जो नैतिक पतन एवं अमानवीयता दिखाई दे रही है वह उस समय से कहीं अधिक गहरी जड़ें बना चुकी है। अतः यह समय की आवश्यकता है कि वर्तमान की सभी समस्याओं के समाधान के लिए महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं विचारों से प्रेरणा लेनी होगी। आज जहाँ धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड चरम सीमा पर है वहीं आर्थिक असमानता एवं अशुचिता राजनीति का अपराधीकरण, सामाजिक अन्याय, महिला उत्पीड़न एवं शोषण जैसी समस्याएँ समाज को निरन्तर खोखला कर रही हैं। नशाखोरी, जातिवाद, भ्रष्टाचार एवं साम्प्रदायिकता से पूरा समाज जर्जरित एवं कमजोर हो रहा है। ऐसी स्थिति में महर्षि दयानन्द जी के द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलकर ही हम अपने समाज एवं राष्ट्र को सही मार्ग पर ला सकते हैं। आज युवा पीढ़ी दिशा विहीन हो चुकी है। अश्लीलता, नग्नता, हिंसा एवं अपराधों से ओत–प्रोत फिल्में एवं इण्टरनेट पर परोसी जा रही अश्लील सामग्री से अधिकांश युवा पतन एवं चरित्रहीनता की ओर जा रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि चौ. अजीत सिंह जी के पूज्य पिता एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौ. चरण सिंह जी महर्षि दयानन्द जी के अनन्य अनुयायी थे। वे उन्हें अपना धार्मिक गुरु मानते थे और उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के विचारों एवं उपदेशों को अपने जीवन में आत्मसात किया था। इसीलिए वे एक ईमानदार तथा गरीबों व किसानों के मसीहा के रूप में प्रसिद्ध हुए। राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने अपने सात्विक आचरण से एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। चौ. अजीत सिंह जी के कंधों पर स्व. चौ. चरण सिंह जी की धरोहर का भार है, अतः उन्हें उनके पदचिन्हों पर चलकर समाज के किसान, मजदूर एवं शोषित वर्ग के लिए कार्य करना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने प्रो. बलजीत सिंह आर्य की समाजसेवा के लिए भी विशेष प्रशस्ति करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की और विद्यालय के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह तथा उनके सहयोगियों की कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रशंसा की। इस अवसर पर श्री सतवीर फौजी पूर्व प्रधान ग्राम सिरसली, श्री सतवीर सिंह राठी धनौरा, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, श्री अवनीश आर्य एवं श्री राजेन्द्र आर्य रठौड़ा, श्री सोमपाल सिंह दाहा चौगांवा आदि महानुभाव एवं गुरुकुल इण्टरनेशनल के सैकड़ों छात्र एवं छात्राएँ कार्यक्रम में उपस्थित रहे। प्रो. बलजीत सिंह आर्य ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा दो प्रदेशों में आयोजित अभिनंदन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलता पूर्वक संपन्न

उड़ीसा प्रान्त के बरगढ जिले मे स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थान नरसिंह नाथ में वैदिक संस्कृति का रक्षक आर्ष पाठविधि का केन्द्र महर्षि दयानन्द गुरूकुल योगाश्रम नरसिंह नाथ पाईकमाल बरगढ मे 7 फरवरी, 2021 को मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य जगत के महान संन्यासी अनेक गुरुकुलो के संस्थापक व संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के सानिध्य मे ओडिशा, छत्तीसगढ आदि क्षेत्रो में विशेष कर आदिवासी क्षेत्रो मे अनेक प्रकार के कष्ट सहन करते हुए 'वैदिक संस्कृति तथा आर्य समाज के प्रचार–प्रसार मे अहर्निश संलग्न 6 आर्य संन्यासी, प्रचारक, भजनोपदेशकों को सम्मानित करते हुए धन राशि,शाल व स्मृति चिन्ह देकर अभिनन्दित किया।

सम्मानित होने वाले महानुभावों स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती,संस्थापक व संचालक सप्त ऋर्षि एवम श्री सिद्ध योगाश्रम बलांगीर स्वामी नकुल देव जी सरस्वती गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास राउरकेला, पण्डित सहदेव शास्त्री संस्थापक व संचालक गुरूकुल सप्त ऋषि सेवाश्रम दयानन्द बिहार देवगांव बलांगीर, पण्डित लक्ष्मण कुमार शास्त्री मणिवारा गुरुवार गंजाम, ब्रह्मचारी कविन्द्र जी वेद प्रचारक भजनोपदेशक, श्री बृजबन्धु रावत पानूसाहू

शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 1 का शेष

कल्पतरु साधना आश्रम में अथर्ववेद पारायण यज्ञ

प्रेरणा से उनके सुपुत्र प्रसिद्ध व्यवसायी श्री प्रवीण त्यागी ने निर्मित करवाया है तथा सभी साधक एवं सेवाव्रती लोगों के लिए समर्पित किया हुआ है। इस आश्रम में योग साधना, प्राकृतिक चिकित्सा एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की गई है। श्री प्रवीण जी की प्रबल इच्छा है कि इस आश्रम का लाभ सभी साधक लोग लें। समय–समय पर योग साधना एवं सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जायें। उन्होंने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से आग्रह किया कि इस आश्रम का सदुपयोग आप आर्य सामाजिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए ऐसे कर्मठ समाजसेवी तैयार करने के लिए भी कर सकते हैं जो यहाँ रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करें और फिर कार्यक्षेत्र में जाकर उन विचारों को फैलाने का कार्य करें। आश्रम की भावी योजनाएँ शीघ्र ही तैयार की जायेंगी और देश–विदेश में विज्ञापित की जायेंगी।

इस अथर्ववेदीय पारायण यज्ञ एवं जन्मोत्सव के अवसर पर आमंत्रित विद्वानों ने अपने अनुभवपूर्ण एवं विद्वतापूर्ण विचारों से सभी को अनुप्राणित किया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सारगर्भित प्रवचनों से श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो गये। स्वामी जी ने मानव निर्माण के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देषित सोलह संस्कार, परिवार निर्माण के लिए पंच महायज्ञ एवं कोरोनाकाल में सर्वाधिक उपयोगी रहे वैदिक संस्कृति के तीन स्तम्भ यज्ञ, योग एवं आयुर्वेद के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले श्रोताओं में अधिकतर प्रतिष्ठित एवं गणमान्य लोग ही आमंत्रित थे। उनकी गरिमामयी उपस्थिति में यजमान परिवार एवं समस्त सम्बन्धीगण ने सपत्नीक यज्ञ में यजमान बनकर श्रद्धा पूर्वक आहुतियाँ प्रदान की। यजमान बनने वालों में सर्वश्री पं. माया प्रकाश त्यागी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला त्यागी, श्री प्रवीण त्यागी एवं श्रीमती सुमन त्यागी, श्री विभोर त्यागी एवं श्रीमती प्राप्ति त्यागी, श्री वैभव त्यागी एवं श्रीमती प्राक्षी त्यागी तथा परिवार के अन्य मुख्य सदस्य उल्लेखनीय हैं। पं. माया प्रकाश त्यागी अपनी चौथी पीढ़ी का जन्मोत्सव मनाकर अत्यन्त हर्षित थे। सभी सम्मानित अतिथिगण उन्हें इस सौभाग्य को प्राप्त करने के लिए बधाई दे रहे थे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाये तो समाज में बेटियों के प्रति उपेक्षा एवं उदासीनता की मानसिकता प्रभावी है। किन्तु इस परिवार ने एक बच्ची का उत्साहपूर्वक जन्मोत्सव समारोह करके एक विशेष उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कार्यक्रम के अन्त में पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ईश्वर की मेरे और मेरे परिवार पर विशेष कृपा है जो आज आप सभी ने न केवल हमारी पड़पौत्री को बल्कि पूरे परिवार को अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ प्रदान की। उन्होंने कहा कि मेरे ऊपर ईश्वर की यह भी महान कृपा है कि मुझे प्रवीण जैसा सुयोग्य सुपुत्र मिला, जिन्होंने हमारी भावनाओं एवं कामनाओं का गम्भीरता पूर्वक ध्यान रखते हुए हर कार्य किया। आज का यह जन्मोत्सव समारोह एवं अथर्ववेद पारायण यज्ञ मेरे आग्रह पर नहीं बल्कि मेरे पौत्र विभोर एवं पौत्रवधु प्राप्ति ने आग्रह पूर्वक यह प्रस्ताव रखा कि वे अपनी बेटी के जन्मदिन पर एक वेद का यज्ञ करना चाहते हैं और जन्मदिन को वैदिक विधि से ही मनाना चाहते हैं। यह बात सुनकर मेरा हृदय गदगद हो गया और मैंने सहर्ष उन्हें इस कार्य को करने की न केवल स्वीकृति दी बल्कि इसे पूरे उत्साह, श्रद्धा एवं भावना के साथ आयोजित करने के लिए प्रेरित किया। आज यह कार्यक्रम आप सबके समक्ष जिस भव्यता के साथ सम्पन्न हो रहा है उसके लिए मैं परमपिता परमात्मा की विशेष कृपा मानता हूँ। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि मेरे दोनों पौत्र और पौत्र वधुएँ तथा उनके बच्चे भविष्य में भी इसी प्रकार यज्ञ आदि शुभ कार्यों को करते रहें और अपने जीवन में दुर्गुण एवं दुर्व्यसनों से दूर रहकर भरपूर यश एवं कीर्ति प्राप्त करें। पण्डित जी ने कल्पतरू आश्रम के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह आश्रम हमने अपने लिए नहीं बल्कि सभी के उपयोग के लिए बनाया है। आप सभी इसका लाभ ले सकते हैं। उन्होंने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वामी जी के साथ जब से मैंने कार्य करना शुरू किया है तब से उनके प्रति मेरी आत्मीयता एवं लगाव इतना प्रगाढ़ हो गया है कि मैं कभी भी उनसे कोई आग्रह करता हूँ तो बड़ी उदारता के साथ स्वामी जी उसे सहर्ष स्वीकार करते हैं। इस कार्यक्रम के लिए भी मैंने उनसे निवेदन किया था और आज वे पैर में चोट होने के बावजूद भी यहाँ पधारे हैं यह उनके स्नेह एवं विनम्रता को दर्शाता है। इसी प्रकार श्री के.सी. त्यागी, आचार्य प्रमोद कृष्णम् जी, श्री अजीत त्यागी, आचार्य गुरुवचन शास्त्री एवं डॉ. योगेश शास्त्री भी हमारे पारिवारिक कार्यक्रमों में सदैव अपना स्नेह प्रदर्शित करते हुए सम्मिलित होते हैं। आर्य समाज के सभी प्रतिष्ठित कार्यकर्ता एवं स्थानीय नेतागण जो यहाँ पधारे हुए हैं उनके प्रति भी मैं हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ और आशा रखता हूँ कि सभी का स्नेह इस परिवार के साथ बना रहेगा। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

माता-पिता घर की छत हैं उन्हें बोझ न समझें

- सरिता गुप्ता

अगर आज युवा वर्ग संयुक्त परिवार का निर्माण करने का प्रयास करें तो बिना किसी प्रयास के आने वाली पीढ़ी सभ्य एवं संस्कारी हो जायेंगी और माता-पिता को परिवार का ही हिस्सा समझें तो सारी परेशानियाँ सुबह की धुंध की तरह उड़ जायेंगी। फिर देखो घर किस प्रकार खुशियों की महक से महकता है। ये याद रखो जिस घर पर छत नहीं होती उस घर को किसी आपदा से नहीं बचाया जा सकता चाहे दीवारें कितनी ही मजबूत क्यों न हों। माता-पिता घर की छत हैं। उन्हें बोझ मत समझो बल्कि अपना सौभाग्य समझो क्योंकि जब तक हमारे बड़े हमारे साथ होते हैं तब तक जिन्दगी एक नगमे की तरह गुनगुनाती है, जीवन में खुलकर हंस सकते हैं। मगर जब हमारे ऊपर घर के बड़े व्यक्ति की तख्ती टंग जाती है तो हमारी जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं, हर वक्त बड़े होने का एहसास हमें गम्भीर बना देता है, धीरे-धीरे हम हंसना-बोलना भूल जाते हैं। इसलिए जब तक माता-पिता की शीतल छांह में बैठने का मौका मिले, तब तक अपना बचपन महसूस करो, समेट लो सुखद क्षणों को मीठी यादों के रूप में। माता-पिता की इतनी सेवा करो कि उनकी दुआओं से इहलोक तथा परलोक दोनों सुधार लो यही सच है।

माँ बाप एक ऐसा सम्बल हैं जिनकी छत्रछाया में रहते हुए एक बालक अपने को सदैव सुरक्षित एवं गौरवान्वित महसूस करता है। एक बच्चे के गर्भ में आते ही हर माँ-बाप की खुली आँखों में एक सपना पलने लगता है बच्चे की किलकारी और सुन्दर भविष्य।

माँ-बाप जीवन की वह अमूल्य पूँजी हैं जिसके समक्ष जीवन के सारे सुख, सारी दौलत छोटी लगती हैं। माँ-बाप ही हैं जो हमें इस सुन्दर सृष्टि को देखने के लिए इस संसार में लाते हैं। बहुत खुशनसीब हैं वे बच्चे जिनका बचपन माँ के आंचल तथा पिता के साए में बीतता है। माँ-बाप आजीवन बच्चे को कवच स्वरूप हर आपदा हर संकट से बचा कर रखते हैं। माँ रात भर जाग-जाग कर बच्चे को पालती है। पिता दिन भर मेहनत कर पसीना बहाकर जो भी कुछ कमाता है अपने बच्चे की एक किलकारी पर एक मुस्कराहट पर न्यौछावर कर देता है। अपने बच्चों के खिलौनों पर खर्च करने में एक पिता असीम खुशी एवं सन्तुष्टि का अनुभव करता है। उन खिलौनों से उसका पेट नहीं भरता। पर हाँ बच्चे को खुश देख आत्मा अवश्य तृप्त हो जाती है।

मगर एक बहुत पुरानी कहावत है - 'जिसके पैर न फटी बिवाई वो क्या जाने पीर पराई'। जो बच्चे बचपन से लेकर अधेड़ उम्र तक माँ-बाप के साए में पले-बढ़े हों वे माता-पिता के महत्त्व को समझ नहीं पाते और वृद्धावस्था में उन्हें अकेले छोड़ देते हैं। वृद्धावस्था से जूझने के लिए उन्हें वृद्धाश्रम में भेज देते हैं। यदि साथ रहते भी हैं तो उनके साथ नौकरों जैसा व्यवहार किया जाता है। आज एक नहीं बल्कि घर-घर की यही कहानी है कि हर माता-पिता जीवन की संध्या बेला में अपने बच्चों के साथ रहने का अरमान पूरा नहीं कर पाते। अपने पोते-पोती के साथ खेलने के सुख से उन्हें वंचित रखा जाता है। आज के बच्चे युवा होने पर अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदारी समझते हैं, माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य को भूल जाते हैं।

माता-पिता का महत्त्व उन बच्चों से पूछो जो इस दुनिया में आँखें जब खोलते हैं तो स्वयं को एक अनाथालय में पाते हैं। जिन्होंने कभी माँ की गोद में सिर नहीं रखा, कभी माँ के मुँह से लोरी नहीं सुनी, कभी माँ के हाथ से रोटी नहीं खाई, पिता की उंगली पकड़ कर चलना नहीं सीखा, पिता के कंधे पर चढ़कर घोड़ा बनकर नहीं खेले बल्कि वक्त ने उन्हें गिर-गिर कर चलना सिखाया, जिनकी आँखे माँ-बाप की कल्पना मात्र से ही नम हो जाती है वे बच्चे अन्य बुजुर्गों की सेवा कर अपने मन को सन्तुष्ट करते हैं और मन में दुःख का अनुभव करते हैं कि वे अपने माता-पिता से दूर हैं, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया क्योंकि विधाता के क्रूर हाथों ने उन्हें उनसे छीन लिया।

बड़े दुःख की बात है आज युवा वर्ग में धर्म के प्रति श्रद्धा कहें या दिखावे की प्रवृत्ति पूरी नजर आती है। मंदिरों में जाकर दुर्गा माँ को छात्र चढ़ाते हैं, चुनरी चढ़ाते हैं, बड़े-बड़े भंडारे करते हैं, जगराता कराते हैं पर घर में अपनी माँ की फटी साड़ी देख लाज नहीं आती, माता-पिता को साथ रखने से, उनके दो वक्त की रोटी से उनका घर का बजट बिगड़ जाता है। अक्सर यही सुना जाता है इतनी मंहगाई में दो आदमी का अतिरिक्त खर्च...... बहुत मुश्किल है।

यदि दो भाई हैं तो बड़ी आसानी से घर की वस्तुओं की तरह माँ-बाप का भी बंटवारा कर दिया जाता है जो अपने बच्चे की एक इच्छा मुँह से निकलते ही पूरी करते थे, माता-पिता की दवाई लाना कितना अखरता है। उस वक्त वे भूल जाते हैं जिस तरह आज वे अपने बच्चों की चिन्ता करते हैं, इन बुजुर्गों ने भी अपनी जरूरतें काट-काट कर उन्हें आज इस योग्य बनाया है।

आज माता-पिता के प्रति सेवा का भाव कहीं भी देखने को नहीं मिलता। समझ नहीं आता वह कौन सी शिक्षा है, वह कौन सी संस्कृति है, वह कौन सा धर्म है जो माता-पिता की अवहेलना, अपमान की शिक्षा देता है। पौराणिक जगत में हर शुभ कार्य में गणेश जी का पूजन किया जाता है हम उनसे ऋद्धि-सिद्धि तथा सुबुद्धि की प्रार्थना करते हैं मगर भूल जाते हैं कि श्री गणेश को सर्वत्र एवं सर्व प्रथम पूजा का अशीर्वाद उन्हें अपने माता-पिता से ही मिला था।

सब जानते हैं जब कार्तिकेय और गणेश जी में तीनों लोक की परिक्रमा करने की शर्त लगी तो गणेश जी ने अपनी मूषक की सवारी पर बैठ शंकर-पार्वती की तीन परिक्रमा कर माता-पिता के चरण-स्पर्श कर कहा मेरी तीनों लोक की परिक्रमा पूर्ण हुई और शंकर-पार्वती के आशीर्वाद से बन गए विजयी तथा बुद्धिविनायक एवं सर्वत्र पूजनीय।

सोचो वे गणेश जिन्होंने अपने माता-पिता को सारा ब्रह्माण्ड समझा। वे गणेश भला उन भक्तों की सेवा कैसे स्वीकार करेंगे जो अपने माता-पिता का आदर नहीं करते, उन्हें आंसू, अपमान एवं दुःख देते हैं। कदम-कदम पर उन्हें ये एहसास कराते हैं कि वे परिवार की एक अवांछित वस्तु हैं, बोझ हैं, परिवार के लिए। मानव जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिसमें माँ-बाप मिलते हैं। यूँ तो हर जीव का जन्म माँ के गर्भ एवं पिता के कार्य से होता है। मगर पशु-पक्षी, कीट-पतंगे व अन्य सभी जीव माँ के गर्भ से जन्म लेने के कुछ दिन बाद ही पराए हो जाते हैं। उनके बीच रिश्तों की डोर नहीं होती, भावनाओं का व्यवहार नहीं होता है, एक-दूसरे के प्रति कोई फर्ज या अधिकार का नाता नहीं होता। एक मानव जीवन ही ऐसा जीवन है जिसमें हम माता-पिता की सेवा कर माता-पिता के ऋण से उऋण हो सकते हैं।

हमें यह बात सदैव याद रखनी चाहिए 'जैसी करनी वैसी भरनी'। आज हम जहाँ हैं कल उस जगह हमारे माता-पिता थे। मगर आज उनके साथ करेंगे कल वैसा ही हमारे साथ हमारे बच्चे करेंगे, क्योंकि इंसान अनुकरणीय प्रवृत्ति का है। वे जो देखते हैं वही सीखते हैं। इसलिए हमें बाल्यकाल से ही बच्चों के मन में घर के बुजुर्गों के प्रति आदर-सत्कार की भावना डालनी चाहिए। बड़ों के चरण स्पर्श, नमस्कार तथा सेवा करने की भावना जागृत करें।

उन्हें बताएं कुछ पाने के लिए झुकना जरूरी है। जब हम बुजुर्गों के चरण-स्पर्श करते हैं तो अनायास ही उनका हाथ हमारे सिर पर आ जाता है तथा मुख से आशीर्वचनों की झड़ी सी लग जाती है। हमारा रोम-रोम खुशी से भीग जाता है। ऐसी अमूल्य निधि हमें बिना किसी खर्च के, थोड़े से प्रयास से ही प्राप्त हो जाता है मगर हम अपनी नासमझी, अज्ञानता एवं अहम् के कारण उसे खो रहे हैं। माता-पिता का अशीर्वाद जीवन के कष्टों से हमारी रक्षा करता है। माता-पिता का आशीर्वाद कभी खाली नहीं जाता। महाभारत-रामायण जैसे धर्मग्रन्थ इस बात का प्रमाण हैं कि बिना माँ-बाप के चरण स्पर्श एवं आशीर्वाद के, किसी शुभ कार्य का श्री गणेश नहीं किया जाता था। इस अपनों की भीड़ में माता-पिता से अधिक शुभ-चिन्तक कोई हो ही नहीं सकता।

आज हम सबका फर्ज है कि अपने बच्चों के मन पर अपने चरित्र एवं संस्कारों की छाप ऐसी छोड़ें कि आपका मन-भरपूर खुशी से नाच उठे। पृथ्वी गोल है। आज हमें अपने बच्चों की परवरिश इस प्रकार करनी है कि वे सभ्य, आधुनिक एवं संस्कारी बनें।

एक पूर्ण जीवन वही जीता है जो माता-पिता की सेवा करता है। जीवन की संध्या बेला में हर माता-पिता की एक आरजू होती है कि उनके मन आंगन में घर के चिराग की रोशनी सदा रहे। माता-पिता की दुआओं में बहुत असर है। माता-पिता कभी अपने बच्चों को बद्दुआ नहीं देते, चाहे वे कितने ही कष्ट में हों। मगर आज जो घरों में माता-पिता की दीन-हीन अवस्था हम देख रहे हैं तो ये कहना जरूरी हो गया है कि माता-पिता की आत्मा को इतना न सताओ कि उनके दुःखी मन से कोई बद्दुआ निकल जाए। माता का ऋण तो हम कभी उतार ही नहीं सकते। माता-पिता कोई सीढ़ी नहीं कि हम उन्नति के शिखर पर पहुँचकर नीचे देखना ही भूल जायें। माता-पिता इमारत की नींव हैं, पेड़ की जड़े हैं। अगर नींव कमजोर होगी तो इमारत स्वतः ही हिल जायेगी।

माता-पिता की सेवा से परिवार रूपी वृक्ष में खुशियों के फल लगते हैं। गणेश जी प्रसन्न होते हैं तथा विघ्नों का नाश करते हैं। उनका आशीर्वाद युगों-युगों तक हमारी रक्षा करता है। अपने ही जीवन में अनेक ऐसे उदाहरण देखे हैं कि जो माता-पिता को अपमानित करते हैं, वे स्वयं भी कभी सुख का जीवन नहीं जी पाते। माँ-बाप और मानव जीवन बहुत पुण्य से मिलता है।

इस मौके को व्यर्थ न गंवाओ। ऐसी सेवा करो माँ बाप की कि उनके आशीर्वाद से हर जन्म में मानव रूप मिले। मैंने बचपन में एक सद् विचार पढ़ा था कि - 'माता-पिता के प्यार को हम माता-पिता बन कर ही समझ सकते हैं।' मगर आज शायद कलियुग का प्रभाव है कि माता-पिता बनने के बाद ही हम माता-पिता के प्रति अपनी जिम्मेदारी भूल जाते हैं।

हर माँ बाप अपने युवा पुत्र के साथ अपने जीवन के कुछ अनुभव बांटना चाहते हैं, कुछ सुखद क्षण बिताना चाहते हैं। मगर आज के युवा मंहगाई एवं छोटे घरों का वास्ता देकर या तो माता-पिता को अकेले छोड़ देते हैं या दो हंसों की जोड़ी का बंटवारा कर देते हैं। आज जब भी कहीं किसी बुजुर्ग व्यक्ति से बात करती हूँ तो उनके मन की कसक को अपने मन में महसूस करती हूँ। जिस वृक्ष की छांव की चाह में वे एक नन्हें से पौधे को ताउम्र सींचते रहते हैं, जीवन की शाम में उन्हें वृक्ष की छाया में नहीं बल्कि तन्हाई के ताप में समय मन की पीड़ा के साथ बिताना पड़ता है।

अगर आज युवा वर्ग संयुक्त परिवार का निर्माण करने का प्रयास करें तो बिना किसी प्रयास के आने वाली पीढ़ी सभ्य एवं संस्कारी हो जायेंगी और माता-पिता को परिवार का ही हिस्सा समझें तो सारी परेशानियाँ सुबह की धुंध की तरह उड़ जायेंगी। फिर देखो घर किस प्रकार खुशियों की महक से महकता है। ये याद रखो जिस घर पर छत नहीं होती उस घर को किसी आपदा से नहीं बचाया जा सकता चाहे दीवारें कितनी ही मजबूत क्यों न हों। माता-पिता घर की छत हैं। उन्हें बोझ मत समझो बल्कि अपना सौभाग्य समझो क्योंकि जब तक हमारे बड़े हमारे साथ होते हैं तब तक जिन्दगी एक नगमे की तरह गुनगुनाती है, जीवन में खुलकर हंस सकते हैं। मगर जब हमारे ऊपर घर के बड़े व्यक्ति की तख्ती टंग जाती है तो हमारी जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं, हर वक्त बड़े होने का एहसास हमें गम्भीर बना देता है, धीरे-धीरे हम हंसना-बोलना भूल जाते हैं। इसलिए जब तक माता-पिता की शीतल छांह में बैठने का मौका मिले, तब तक अपना बचपन महसूस करो, समेट लो सुखद क्षणों को मीठी यादों के रूप में। माता-पिता की इतनी सेवा करो कि उनकी दुआओं से इहलोक तथा परलोक दोनों सुधार लो यही सच है।

महर्षिदयानन्दस्य संस्कारविधौ नारीणां स्थितिः

– डॉ. मनुदेवबन्धुः, आचार्य वेदविभाग

प्रस्तावना

आर्यसमाजस्य संस्थापकः महर्षिदयानन्दः वेदोद्धारकः, राष्ट्रभक्तः,आर्यजातिसमुद्धारकः, संस्कृतभाषायाः प्रबलपोषकः, कुरीतिनिवारकः, पाखण्डखण्डकः, वेदभाष्यकारकः नारीणां कल्याणकारकश्चासीत्। यत्र महर्षिदयानन्दः वेदभाष्यं कृतवान्, तत्रैव सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संस्कारविधि आर्याभिविनय वर्णोच्चारणशिक्षा व्यवहारभानु गोकरुणानिधि पञ्च महायज्ञ विधि आदीनां ग्रन्थाना प्रणेतापि आसीत्। वेदस्य माहात्म्यं व्याकुर्वन्दयान्दो लिखति –

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'

अमर ग्रन्थे सत्यार्थप्रकाशे मातृगुणान् व्याख्यापयन् दयानन्दो लिखति – **'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।'** यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञनवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।'** धन्य वह माता हैकि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।'

गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे –

संस्कारविधेः गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे नारीणां महिमानं विशिनष्टि दयानन्दः – 'गर्भाधान उसको कहते हैं कि जो – **'गर्भस्याधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्।'** गर्भ का धारण अर्थात् वीर्य का स्थापन, गर्भाशय में स्थिर करना जिस क्रियासे होता है, उसी को गर्भाधान संस्कार कहते हैं। जैसे बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं, वैसे उत्तम बलवान् स्त्री-पुरुषों से सन्तान भी उत्तम होते हैं। इससे पूर्ण युवावस्था यथावत् ब्रह्मचर्य का पालन और विद्याभ्यास करके अर्थात् न्यून से न्यून सोलह वर्ष की कन्या और पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य हो और इससे अधिक वय वाले होने से अधिक उत्तमता होती है।क्योंकि बिना सोलहवें वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिए अवकाश उपयुक्त और स्त्री के शरीर में गर्भ के धारण-पोषण का सामर्थ्य भी नहीं होता और पच्चीस वर्ष के बिना पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता।

पुंसवनसंस्कारप्रसंगे –

महर्षिदयानन्दः पुंसवनसंस्कारप्रसंगे नारीणामारोग्यं स्वास्थ्यं सुसमीचीनं भवेत्, भोजनादिकं बलकारि भवेदिति प्रदर्शयन् लिखित – 'इसके पश्चात् स्त्री सुनियम युक्ताहार विहार करे। विशेषकर गिलोय, ब्राह्मी ओषधि और सूंठ (शुण्ठी) को दूध के साथ थोड़ी-थोड़ी खाया करे और अधिक शयन और अधिक भाषण, अधिक खारा, खट्टा, तीखा, कड़वा, रेचक, हरड़ आदि न खावे, सूक्ष्म आहार करे। क्रोध, द्वेष, लोभादि दोषों में न फंसे, चित्त को सदा प्रसन्न रखे, इत्यादि शुभाचरण करे।'

सीमन्तोन्नयनसंस्कारप्रसंगे –

सीमन्तोन्नयनसंस्कारः पूर्णरूपेण गर्भिणी स्त्रीणां कल्याणाय क्रियते। दयानन्दो लिखति – 'अब तीसरा संस्कार सीमन्तोन्नयन कहते हैं, जिससे गर्भिणी स्त्री का मन सन्तुष्ट, आरोग्य, गर्भस्थिर, उत्कृष्ट होवे और प्रतिदिन बढ़ता जावे।'

विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्याम्।
पुमांसं पुत्रानाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा॥

विष्णोः सर्वव्यापकस्य परमेश्वरस्य श्रेष्ठेन रूपेण सौन्दर्यपूर्णरूपेण अस्यां गवीन्यां गोसदृश्यां नार्यां पुमांसं बलवन्तं रोग रहितं पुत्रम् आधेहि। हे विष्णो! दशमे मासे इमां नारीं मदीयां पत्नीं सर्वगुणसम्पन्नस्य सन्तानस्य जननीं निर्मापय। अग्रे लिखति दयानन्दः – **'किं पश्यसि? प्रजां पश्यामि।'** येन-केन प्रकारेण प्रजा भवेदेव। सीमन्तोन्नयन संस्कारस्य समापन प्रसंगे महर्षिदयानन्दो लिखति –

'तत्पश्चात् एकान्त में वृद्ध कुलीन और सौभाग्यवती, पुत्रवती गर्भिणी अपने कुल की और ब्राह्मणों की स्त्रियाँ बैठें, प्रसन्न वदन और प्रसन्नता की बातें करें और वह गर्भिणी स्त्री उस खिचड़ी को खावे और वे वृद्ध समीप बैठी हुई उत्तम स्त्री लोग आशीर्वाद देवें।

ओ३म् वीरसूस्त्वं भव, जीवसूस्त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव।

हे नारि! त्वं वीरपुत्राणामुत्पादयित्री भव। हे स्त्री! त्वं जीवनशीलानामायुष्यमतां सन्तानानां जननी भव। हे पत्नी! त्वं जीवनशीलस्यायुष्मतः पत्युः पत्नी भव। त्वमेव समस्तपरिवारस्य कल्याणकर्त्री असि। त्वमेव सम्पूर्ण परिवारस्य पालयित्री असि। त्वमेव अन्नपूर्णा असि।

जातकर्मसंस्कारप्रसंगे –

जातकर्मसंस्कारः जातस्य जन्मप्राप्तस्य पुत्रस्य पुत्र्याः वा भवति। अमुस्मिन् संस्कार पुत्रस्य कल्याणाय आयुर्विद्या बल बर्धनाय पिता कर्मकाण्डं करोति, भगवन्तञ्च प्रार्थयति।

ओ३म् इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः।
सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्॥

हे स्त्री! त्वं इडा स्तुत्या असि। त्वं मैत्रावरुणी असि। त्वं मैत्री सम्बन्धयोग्या असि। त्वं वरयितव्या असि। त्वं वीरपुत्रं वीराङ्गना पुत्रीं वोत्पादयित्री असि। त्वं स्वयमेवापि वीरवती भव। वीरता युक्तानि साहसिकानि कार्याणि कुरु। त्वं नारी असि। त्वमस्मानपि वीरान् भावय, निर्माय। दयानन्दो लिखति –

'इस मन्त्र में ईश्वर की प्रार्थना करके प्रसूता स्त्री को प्रसन्न करके पश्चात् स्त्री के दोनों स्तन किञ्चित् उष्ण सुगन्धित जल से प्रक्षालन कर पोंछ के......... बालक के मुख में देवें।'

परन्तु अद्यत्वे अत्याधुनिकाः नार्यः स्वदुग्धं न धापयन्ति, न पाययन्ति। परन्तु दयानन्दो लिखति सद्यो जाता माता यत् सद्यो जातं पुत्रं स्वकीयं स्तनस्थं दुग्धं स्तनन्धयमवश्यं पाययतु।

अद्यापि सुपरीक्षितमेतद् यत् माता यदि स्वकीयं पीतवर्णं स्वर्णिम वर्णं दुग्धं पाययति, तदा सन्तानं स्वस्थम्आयुष्मद् बलवद् विद्वांश्च भवति। ●

पृष्ठ 4 का शेष

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा दो प्रदेशों में आयोजित अभिनंदन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलता पूर्वक संपन्न

पटना कंटिलो नयागढ ओडिसा आदि थे।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता प्रधान श्री रामपाल शास्त्री उपप्रधान सोमदेव शास्त्री आचार्य बुद्धदेव जी गुरूकुल नरसिंह नाथ आचार्या शारदा जी कन्या गुरूकुल देवनगर घुचापाली श्रीमान अनन्त कुमार शास्त्री व्यवस्थापक गुरूकुल योगाश्रम नरसिंह नाथ आदि अनेक प्रतिष्ठित विद्वानो ने अपनी उपस्थिति व उद्बोधन से सभी को लाभान्वित किया। गुरूकुलो के अनेक छात्र छात्राओ को मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियो द्वारा छात्रवृत्ति के चैक प्रदान किये गए।

इस अवसर पर गुरूकुल के 35 नये ब्रह्मचारियो का पण्डित नरदेव जी यजुर्वेदी प्रधान वेद प्रचारक मण्डल देनहाक होलेण्ड ने यजोपवीत एवम वेदारम्भ संस्कार संपन्न कराया। स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती का आशीर्वाद सभी को प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित नरदेव जी यजुर्वेदी द्वारा किया गया। ऋर्षि लगंर भण्डारे के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिनांक 14 फरवरी 2021 को विश्व वारा कन्या गुरुकुल रूड़की रोहतक हरियाणा में 'मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित अभिनंदन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ । कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने वैदिक मंत्र उच्चारण के द्वारा किया। शुभारंभ के पश्चात मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता प्रधान रामपाल शास्त्री ने मानव सेवा प्रतिष्ठान के उद्देश्यों को सामने रखते हुए इसकी स्थापना और इसके कार्यों का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात आचार्या डॉक्टर सुकामा जी ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित शिक्षा के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को वर्तमान की सभी समस्याओ का समाधान बताया ।अमेरिका से पधारे हुए डॉक्टर अमरजीत शास्त्री ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने सन्देश मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की विशेषताओं का वर्णन करते हुए स्वामी ओमानंद सरस्वती गुरुकुल झज्जर के उपकारों की चर्चा करते हुए यह स्पष्ट घोषणा की अगर स्वामी ओमानंद सरस्वती नहीं होते हमें गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने का शुभ अवसर प्राप्त नहीं होता तो आज हमारे सैकड़ो छात्र छात्राए सम्मानित एव उच्च पदो को प्राप्त नही कर पाते ।मुझे जो आज अमेरिका जैसे देश में धर्माचार्य के पद पर आसीन होने का अवसर प्राप्त हुआ है यह सब स्वामी जी की कृपा व गुरुकुल का उपकार है। छात्रवृत्ति वितरण की श्रृंखला मे माननीया डॉक्टर किरणमयी जी आर्या अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक हरियाणा शिक्षा विभाग ने अपने कर कमलों से अनेक गुरुकुलो विद्यालयों के छात्र छात्राओं डॉ. कंवरसिह शास्त्री महामन्त्री मानव सेवा प्रतिष्ठान के संयोजन मे छात्रवृत्ति प्रदान की गई। अभिनन्दन सम्मान की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महाशय सोमपाल आर्य भजनोपदेशक उत्तर प्रदेश को डा अमरजीत शास्त्री द्वारा अपनी पत्नी स्व श्रीमती धीरज आर्या की स्मृति मे स्थापित सम्मान से , श्री ब्रह्मजीत सिंह व कर्मजीत सिंह ने अपने परिवार द्वारा पुज्य पिता चौधरी राजेन्द्र देव सिंह आर्य व मान्या माता श्रीमती वेदकोर आर्या की संस्मृति मे स्थापित सम्मान से पण्डित रामरख जी आर्य भजनोपदेशक भिवानी हरयाणा व श्रीमती सन्तोष बाला आर्या भजनोपदेशिका सोनीपत एवं डॉ. विजयपाल जी आर्य अमेरिका ने अपनी पुज्या माता श्रीमती शीलवती देवी बलभगढ भरतपुर राजस्थान की स्मृति मे स्थापित सम्मान से श्रीमती ममता आर्या रोहतक को मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियो ने परिवारो के साथ मिलकर डॉ. किरणमयी जी के करकमलो द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जो अति सराहनीय था। श्री जसवीर मलिक सम्पादक जाट रत्न मासिक पत्रिका रोहतक ने सभा मे अपने विचार रखते हुए इस प्रकार के कार्यक्रमो को शिक्षा के विकास हेतु आवश्यक बताते हुए सभी को शुभकामनाए प्रदान की। मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान चन्द्रदेव शास्त्री ने कोराना माहामारी की इन विकट परिस्थितयों मे भी इस आयोजन की विशेषताओं की चर्चा करते हुए छात्र छात्राओ को आशीर्वाद प्रदान किया। अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक हरयाणा शिक्षा विभाग के पद पर नियुक्त एवम कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गुरुकुल परम्परा से शिक्षित दीक्षित माननीया बहन डॉ. किरणमयी आर्या ने अपना आशीर्वाद देते हुए ईश्वर के प्रति दृढ़संकल्प को आगे बढने मे सहायक बताया। अपने गुरूकुलीय अनुभवो को साझा करते हुये परिश्रम पुरुषार्थ को जीवन का मुख्य कर्तव्य बताया। प्रतिष्ठान के उपप्रधान सोमदेव शास्त्री उपमन्त्री कमलेशदेवी वरिष्ठ सदस्य चौधरी बलजीत सिंह सांगवान आदि अन्य अनेक महान व्यक्तित्वो ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को शुषोभित किया। सम्मानित सदस्यो ने मानव सेवा प्रतिष्ठान के इस कार्यक्रम को उपयोगी एव आवश्यक बताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। अन्त मे कार्यक्रम के संयोजक रामपाल शास्त्री व गुरुकुल की प्राचार्या डॉ. सुकामा ने सभी आगन्तुक महानुभावो का धन्यवाद करते हुए

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज सैक्टर–19, फरीदाबाद का 63वाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 12 से 14 फरवरी, 2021 तक उत्साह एवं समारोह पूर्वक मनाया गया

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. जयेन्द्र जी आचार्य गुरुकुल नोएडा, चौ. राजेन्द्र सिंह बीसला पूर्व विधायक व श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट आदि विद्वान् कार्यक्रम में हुए सम्मिलित

आर्य समाज सैक्टर–19, फरीदाबाद का 63वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 12 से 14 फरवरी, 2021 तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रांगण में प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 बजे तक यज्ञ एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम रहा जिसमें डॉ. जयेन्द्र आचार्य के प्रभावशाली प्रवचनों के द्वारा श्रोताओं ने लाभ उठाया। वहीं 12 व 13 फरवरी, 2021 को पारिवारिक सत्संग का कार्यक्रम 2.30 से 6 बजे तक चला। 12 फरवरी, 2021 को आर्य समाज के मंत्री श्री अशोक गर्ग एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दर्शन के निमंत्रण पर उनके निवास सैक्टर–16, फरीदाबाद पर शानदार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी प्रकार 13 फरवरी को आर्य समाज के प्रधान श्री मदन लाल तनेजा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला तनेजा के निमंत्रण पर उनके निवास सैक्टर–16, फरीदाबाद पर आयोजन किया गया। 14 फरवरी को आर्य समाज के प्रांगण में 21 कुण्डीय यज्ञ एवं व्याख्यानों का कार्यक्रम दोपहर 1 बजे तक चला। 13 फरवरी के कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए और उन्होंने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द जी को 19वीं सदी का महान् क्रांतदर्शी संन्यासी बताते हुए कहा कि महर्षि का दृष्टिकोण वैश्विक था वे वसुधैव कुटुम्बकम् को चरितार्थ करना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने आर्य समाज के छठवें नियम में इसका उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि – 'संसार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना।' महर्षि दयानन्द सरस्वती पूरे विश्व के लोगों की शारीरिक उन्नति के लिए यह आवश्यक मानते थे कि उनके शरीर के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई, शिक्षा एवं न्याय प्रत्येक व्यक्ति को मिलना चाहिए। ये 6 मूलभूत आवश्यकताएं प्रत्येक मनुष्य की शारीरिक उन्नति के लिए आवश्यक हैं। इसी प्रकार पूरे विश्व के लोगों के आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि सबके बीच परस्पर प्रेम एवं मैत्री भाव हो और वे सभी ईश्वर के सही स्वरूप को समझते हुए यह स्वीकार करें कि प्रत्येक प्राणी में विद्यमान ईश्वर और जीवात्मा ऐसी ही है जैसी उसके स्वयं के भीतर है। जब यह विचार प्रत्येक व्यक्ति मान लेगा तो उसकी आत्मा की उन्नति होगी और वह सब प्राणियों एवं सभी मनुष्यों के प्रति सहृदय होगा और जब शारीरिक तथा आत्मिक रूप से मनुष्य उन्नति को प्राप्त करेंगे तो ऐसे मनुष्यों के द्वारा निर्मित समाज की उन्नति स्वयमेव हो जायेगी, ऐसे समाज में जाति, पाति, मजहब–सम्प्रदाय, काला–गोरा, गरीब–अमीर, स्त्री–पुरुष आदि का भेदभाव समाप्त होगा। ऐसा समाज भी पूरी वसुधा पर एक परिवार के रूप में बन सकेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को सभी संकीर्णताओं से हटकर विश्व के सभी मनुष्यों एवं अन्य प्राणियों के लिए उपयोगी एवं प्रासांगिक बताया।

इस अवसर पर युवा विद्वान् डॉ. जयेन्द्र आचार्य का भी पंचमहायज्ञों पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ। आर्य भजनोपदेशिका संगीता आर्या के ओजस्वी भजनों का कार्यक्रम भी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाला था। मंच का संचालन आर्य समाज के मंत्री श्री अशोक गर्ग ने किया और कार्यक्रम की अध्यक्षता समाज के प्रधान श्री मदन लाल तनेजा ने की। इस अवसर पर सर्वश्री राजेन्द्र सिंह बीसला पूर्व विधायक, श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट, डॉ. सत्यदेव आर्य, डॉ. गजराज सिंह आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, श्रीमती बिमला अरोड़ा प्रधाना महिला प्रकोष्ठ, श्रीमती संतोष छावड़ा मंत्री, श्रीमती शांता अग्रवाल, श्रीमती सरला कटारिया, श्री विजय कुमार आर्य, श्री महेश चन्द्र आर्य, श्री लोकनाथ क्वात्रा कोषाध्यक्ष, श्री नन्दलाल कालरा बल्लभगढ़, श्री देशराज अग्रवाल पूर्व प्रधान आर्य समाज सैक्टर–28 एवं 31, श्री एस. पी. अरोड़ा प्रधान सैक्टर–15 आदि महानुभाव उपस्थित थे। 14 फरवरी के कार्यक्रम में युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. आचार्य जयेन्द्र जी एवं अन्य स्थानीय नेताओं के व्याख्यान तथा संगीता आर्या के भजनों का कार्यक्रम रहा। यज्ञ के ब्रह्मा पद को श्री देवेन्द्र शास्त्री ने सुशोभित किया। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह एवं समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यजुर्वेद भाष्य भारी छूट पर उपलब्ध

250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य

मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है (डाक व्यय अतिरिक्त)

(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।